दिनांक :- 16-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फारूक आलम (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय वर्ष (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- दः

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- चीन की क्रांति

(ग) तात्कालिक कारण :- 1911 की चीनी क्रांति के तात्कालिक कारणों में दो घटनाएँ उल्लेखनीय है। प्रथम, इस समय पीकिंग के केन्द्रीय सरकार के विरुद्ध प्रान्तीय शासकों में विरोध की भावना विकसित हो रही थी। पीकिंग सरकार की अनुमति प्राप्त कर कई विदेशी फर्म चीन में रेलवे लाइन का निर्माण करा रहे थे। चीन के कई प्रान्तों के गवर्नर यह काम

स्वयं करना चाहते थे लेकिन सरकार ऐसा नहीं चाहती थी पर इस विषय पर केन्द्रीय और प्रांतीय सरकारों के बीच मतभेद बहुत बढ़ गया। अनेक स्थानों में विद्रोह शुरू हो गए उपद्रवों की शुरुआत जेचुआन से हुई। वहाँ रेलवे निर्माण के नियमित पूँजी का अधिकांश भाग प्रबंधकों ने अन्य कार्यों में लगाकर नष्ट कर दिया था। इस हालत में केन्द्रीय सरकार ने साझेदारों को रकम के पचास प्रतिशत से भी कम बौंड देना निश्चित किया। साझेदारों ने इसका विरोध किया। सम्राट के पास विरोधी पत्र भेजे गए और प्रदर्शन शुरू हो गए। सरकार ने सितम्बर 1911 में सभी विरोधी नेताओं को बन्दी बना लिया। किंतु इससे विद्रोह दबा नहीं, अपितु इसने क्रांति का रूप धारण कर लिया।

एक दूसरी घटना हांको का बम विस्फोट है। जेचुआन के आन्दोलन का प्रारंभिक स्वरूप क्रांतिकारी नहीं था।

इसमें केवल रेलवे निर्माण की पूंजी के भागीदारी का मामला था। लेकिन जिस समय यह आंदोलन जोरों पर था उसी समय 10 अक्टूबर, 1911 को हांको के रूसी बस्ती के एक घर में बम विस्फोट हुआ। यह घर क्रांतिकारियों का अड्डा था। पुलिस ने कुछ सैनिक अफसरों पर भी संदेह करके उन्हें गिरफ्तार कर लिया सरकारी अफसरों को घेर लिया और उसमें आग लगा दी। परिणाम भाग खड़ा हुआ। कर्नल ली युआन हुंग क्रांतिकारियों का नेतृत्व किया। उनके नेतृत्व में सैनिकों ने वुचांग पर अधिकार कर लिया। देखते ही देखते क्रांति देशव्यापी हो गई।

क्रांति का विस्तार – हांको नगर बम विस्फोट घटना क्रांति का तात्कालिक कारण बन गई। छानबीन करने पर पुलिस को पता चला कि जिस घर में विस्फोट हुआ था वह क्रांतिकारियों का बड़ा अड्डा था। वस्तुतः यह डॉ. सनयात सेन के समर्थकों

का गुप्त संस्थान था। अनेक व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया और उन्हें तत्काल मौत की सजा दी गई। जाँच करने पर यह भी पता चला कि फूचाँग स्थित सेना के अनेक लोग क्रांतिकारियों के साथ मिले हुए थे। अतः इस डर से कि पुलिस आगे भी कार्यवाही करेगी, इस सेना ने विद्रोह कर दिया और अपने सेनापति कर्नल ली युआन हुंग के सामने दो विकल्प रखे। तत्काल मृत्यु अथवा क्रांति का नेतृत्व। कर्नल को क्रांतिकारियों से कोई सहानुभूति नहीं थी, लेकिन परिस्थितिवश बाध्य होकर उसने क्रांति का नेतृत्व करना मान लिया। शीघ्र ही क्रांतिकारियों हांको, हान्याग और फूचाँग पर अधिकार कर लिया।

क्रांति की ज्वाला तेजी से यांगत्सी तट के विचारों और फैलने लगी। शांतुंग शेंसी तथा चिहली ने पीकिंग ने विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। परंतु उत्तर की सेनाएँ विद्रोह में

सम्मिलित नहीं हुई। चूंकि क्रांतिकारियों ने समन्वय करने का प्रयत्न किया और उन्होंने सभी स्वतंत्र प्रान्तों से अपने-अपने प्रतिनिधि वुचांग भेजने का अनुरोध किया। ऐसा इसलिए कि एक क्रांतिकारी परिषद की स्थापना की जा सके। इन प्रतिनिधियों द्वारा एक 'वचनपत्र' तैयार किया गया जो बाद में प्रारंगिक काम-चलाऊ संविधान के आधार के रूप में नानकिंग में स्वीकार किया गया। इस बीच क्रांति की चिनगारी शंघाई तक पहुँच चुकी थी। जहां एक फौजी सरकार की स्थापना की गई। इस सरकार ने सारे विद्रोह के प्रतिनिधित्व करने का दावा पेश किया। इस अस्थायी सरकार के विदेशमंत्री वूतिंग फेंग था जो अमरीका में चीनी राजदूत रह चुका था। उसने क्रांति के उद्देश्यों के संबंध में एक घोषणापत्र प्रकाशित किया। सरकार ने विदेशियों से अपील की कि वे चीन के आन्तरिक मामलों में

Scanned with CamScanner

हस्तक्षेप न करे तथा पीकिंग सरकार की किसी भी तरह की सहायता न करें साथ ही यह भी स्पष्ट कर दिया गया कि यदि विदेशी सहायता के बाद भी शाही सरकार पराजित हो गई तो केन्द्रीय शासन को दिए गए ऋणों को वैध नहीं माना जाएगा। सभी क्रांतिकारी इस बात से सहमत थे कि मंचू वंश का अंत कर देश में गणतंत्र की स्थापना होनी चाहिए।

राष्ट्रीय महासभा - पीकिंग स्थित राष्ट्रीय महासभा शाही सरकार से नित नई-नई माँगे पेश करने लगी। यह देश में उत्तरदायी शासन की स्थापना चाहती थी महासभा ने यह मांग की कि शेंग सु आन हुआई को शीघ्र ही परिवहन मंत्री पद से हटा दिया जाए, क्योंकि उसने विदेशियों से पैसा लेकर रेलवे-लाइनों का निर्माण किया था। सरकार ने शीघ्र ही शेंग को

पदच्युत कर दिया। महासभा की दूसरी माँग एक मंत्रिपरिषद की स्थापना करने की थी। इसमे यह भी कहा गया कि राजकीय परिवार का एक भी व्यक्ति इसका सदस्य नही होगा। महासभा ने शासन संचालन के लिए संविधान निर्माण की भी माँग रखी। इसने सारे राजनीतिक कैदियो या विद्रोहियो को छोड़ देने की माँग की। नवम्बर 1911 मे सरकार ने महासभा की सारी माँगे मान लि।

मंचू सरकार की इस उदारता के बावजूद भी क्रांतिकारियो मे भी कोई शिथिलता नही आई। क्रांति को सफल बनाने के लिए दूकानदारो ने दुकाने बंद कर दी। नौकरी पेशा वालो ने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। छात्रो ने शिक्षक संस्थाओ का बहिष्कार किया और लोगो ने कर देना बंद कर दिया ऐसी दशा मे महासभा का मनोबल और बढ़ गया। इसने मंचू सम्राट को पदच्युत कर एक ऐसे व्यक्ति को सत्ता देने का निर्णय किया।